भगवत् कृपा

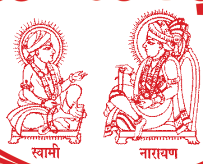

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम् को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम्। विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा॥ शिक्षापत्री, ११६

वर्ष 31 अंक : 5	25.9.2008 गुरुवार (सितंबर – अक्तुबर)	प्रति अंक : 10.00

आओ! दीपावली के दिनों में प्रार्थना के दीप प्रगटाएं...

आसो शुक्ला ९ – दुर्गाष्टमी; नवरात्रे अर्थात्– शक्ति माँ दुर्गा की पूजा-आराधना! भजन, भक्ति करने के सभी के अपने-अपने ढंग होते हैं... पर पूर्ण श्रद्धा एवं अटल विश्वास व मन की पवित्रता एवं निर्मलता से करी **'प्रगट की भक्ति'** ही सच्चा सुख, शांति और आनंद प्रगट करती है... अपने शौक के लिए किए गरबे इत्यादि और बाहरी आडंबर या प्रतिस्पर्धा के लिये की गई 'पूजा' प्रभु तक पहुँच ही नहीं पाती, तो उसका फल हमें कैसे मिलेगा? **गोपियों ने प्रगट श्री कृष्ण के ही मनन – चिंतन में रह कर 'रास' किया – भक्ति करी, तो वे 'वेद की श्रुतियाँ' बन गईं...** इसी प्रकार नवरात्रे के गरबे दिल की सच्चाई से एकमात्र देवी माँ को प्रसन्न करने की भावना से किए जाएं, तो ही नवरात्रों की सार्थकता कही जाए।

नवरात्रे के बाद आएगी **विजयादशमी – दशहरा...** जगत में लोग थोड़ी पूजा करके 'रावण' के पुतले जलाते हैं – जलेबी, पकवान खाकर आनंद करते हैं। परंतु आध्यात्मिक दृष्टि से इस उत्सव का अर्थ बिल्कुल अलग है। वह क्या? तो, अपने भीतर की रावणरूपी आसुरी वृत्तियाँ जो कई जन्मों से हमें अपना गुलाम बना कर अपनी उंगली पर नचा रही हैं, जन्म-मरण के चक्कर में फंसा रही हैं, उससे छुटकारा दिलवाने हमें ऐसे समर्थ गुणातीत स्वरूपों की गोद मिली है। इनके **संबंध मात्र से चौरासी लाख योनियाँ तो कट ही जाती हैं;** साथ ही केवल **उनका बल लेकर उनकी मर्जी में जीने से माया के आवरणों – हठ, मान, ईर्ष्या, लोभ, मद, मोह, आशा, तृष्णा के आसुरी तत्त्वों से लड़ाई लेते हुए दैवीय गुण – दैवीय संपत्ति उपलब्ध होती है...** माया व भक्त की लड़ाई में 'भक्त' की विजय निश्चित है और वही है मुमुक्षु चेतनाओं द्वारा मनाया गया सही अर्थ में सच्चा 'दशहरा'!

चैतन्यदर्शी गुरुवर्य **योगीजी महाराज** ने इसी

दिन गुरुहरि **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी को** त्यागाश्रम में प्रवेश करने **पार्षदी दीक्षा दी...** मानो श्वेत वस्त्र धारण करके उन्होंने प्रगट प्रभु के संबंध वाले मुक्तों के भीतर पलते विकारों को शांत-प्रशांत करने का बीड़ा उठाया और... आज अपने संबंध मात्र से वे संतों, सेवकों, अंबरीषों, मुक्तों की चेतना को श्वेत स्फटिक-सी पवित्र-निर्मल बना कर भगवान स्वामिनारायण–गुरुहरि योगीजी महाराज के चरणों में समर्पित करके अद्भुत गुरुभक्ति अदा कर रहे हैं। वाकई, **आत्मा की समृद्धि और संस्कार प्रभु रखे संत के सिवा अन्य कोई दे ही नहीं सकता।**

विजयादशमी के ठीक पाँच दिन के बाद आती है **'शरद्पूर्णिमा'**... गुणातीत समाज के मुक्तों के लिए तो यही है **'दीवाली'**! आध्यात्मिक क्रांति का महामंगलकारी दिन–यानि **साकारब्रह्म मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी के प्रादुर्भाव का परम पवित्र मंगलकारी दिन!** इस दिन चन्द्रमा अपने पूर्ण रूप में विकसित होकर धरातल को अपनी चाँदनी से प्रकाशित करता है। उसी प्रकार **पूर्णत्व को प्रगटाए साकार ब्रह्म ने पृथ्वी पर अवतरित होकर अद्वितीय साधुता की चरम सीमा तो रख ही दी; पर, साथ ही साथ अपने संबंधमात्र से जीव का मूल अज्ञान टाल करके, जीतेजी एक दिव्य जीवन जीने का प्रकाश देकर हमें धन्य कर दिया!**

शरद्पूर्णिमा गुणातीतानंदस्वामिजी का प्रागट्य दिन तो है ही, साथोसाथ गुरुहरि योगीजी महाराज का प्रगट **ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामिजी** को इसी दिन **'भागवती दीक्षा'** देना यही संदेश देता है कि पूर्णता को प्रगटाए इस पूर्ण स्वरूप के संबंध से तुम पूर्णता को पा सकोगे... **गुरुहरि योगीजी महाराज के अभिप्राय को जान कर प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी व प.पू. कांतिकाका ने** प्रगट प्रभु के संबंध वालों में कुटुंबभाव-आत्मीयता का **जो जीवंत आदर्श रखा, उसी 'आत्मीयता' को देश-विदेश के एक-एक मुक्त के घर में प्रगटाने प.पू. स्वामिजी वर्षों से निरंतर प्रयत्नशील हैं...** सो, **प.पू. स्वामिजी के चरणों में प्रार्थना** कि–

हे स्वामिजी! आपके **'अमृतपर्व'** का मंगलकारी वर्ष जब चल रहा है, तो आप विशेष अनुग्रह करके हमारी सोच ही ऐसी बना दीजिए कि– **'आपके संबंध वाले सभी आत्मीय ही हैं, बस मुझे सभी का आत्मीय बनना है।'**

इसी दिन एक अन्य महत्वपूर्ण अवसर है – प.पू. काकाजी जिनके द्वारा आज धरती पर अखंड प्रगट रह कर मुक्तों को वैसा ही सुख दे रहे हैं... इन विभूतियों में से **प.पू. दिनकरभाई का प्रागट्य दिन – जो कि वैसे तो १ अक्तुबर है, लेकिन प्राकट्य तिथि 'शरद्पूर्णिमा' ही है।** सहज-सरल प.पू. दिनकरभाई का व्यक्तित्व निहारें, तो स्थूल दृष्टि से वे एक सामान्य 'गृहस्थ' ही नज़र आएंगे। परंतु, किसी को भी समझने के लिए जब तक उसे करीब से नहीं देखेंगे, तब तक उसे समझ नहीं पाएंगे। यूं प.पू दिनकरभाई को अंतर की आँखों से जिन्होंने निहारा होगा, उन्हें उनकी आध्यात्मिक शक्ति का अनुभव जरुर हुआ होगा। पर, **ब्रह्मस्वरुप काकाजी महाराज के पद्चिन्हों पर चलते हुए प.पू. दिनकरभाई खूब छुपे रहते हैं कि किसी को उनके बड़प्पन का एहसास ही नहीं होने देते।** यहाँ सहज ही एक प्रसंग याद आता है –

करीब दो-तीन वर्ष पहले प.पू. दिनकरभाई भारत आए थे। तब वे यहां से डाईरेक्ट अमेरिका वापिस जाने वाले थे। उनके साथ पू. दासकाका थे। एयरपोर्ट

पर प.पू. गुरुजी के साथ दिल्ली मंदिर के सेवक उन्हें छोड़ने गए थे। चार-पाँच सूटकेस तो सामान में थे ही। चूंकि पू. दासकाका तो करीब ७०-७५ साल के हैं ही; अतः वे कितना सामान उठा सकते थे? लेकिन ६० वर्षीय **प.पू. दिनकरभाई** तो बिना किसी सेवक के–सहजता से वो सामान कॅरी करके ले गए, क्योंकि अंदर सिक्योरिटी चॅकिंग के लिए तो बॉर्डिंग पास वाले पॅसेन्जर ही जा सकते थे।

यह दृश्य देख कर सहज विचार आ गया कि–**गुणातीत स्वरूप होते हुए भी किसी सेवक की चाहना नहीं, ना किसी प्रकार की अपेक्षा-रंज; केवल ब्रह्मानंद की मस्ती!** साथ ही ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की हुबहु छवि भी आँखों के समक्ष आ गई। वे भी जब कभी कोई सेवक नहीं होता, तो अपना चश्मा, नैपकिन एक हाथ में पकड़ कर यूं ही चल पड़ते थे और... प.पू. गुरुजी कई बार बताते भी हैं कि प.पू. काकाजी महाराज जब मुंबई से अकेले प्लेन में आते, तो वही ब्रह्मानंद की मस्ती से अपनी बॅग हाथ में उठा कर चले आते थे।

यही कारण है कि आज प.पू. दिनकरभाई के सान्निध्य व समागम में हर एक मुक्त स्वयं के भीतर भी ऐसा परिवर्तन महसूस करता है। सो, ऐसे शांतिदूत के प्रागट्य दिन पर अंतर से यही प्रार्थना–

काकाजी का जंगम मंदिर बन गए हैं जो,
Abott *के* Goodman, *काकाजी ने गायब किया एक* 'O'
Godman *बने,* Goodman *से वो,*
अनुरूप स्वरूप काकाजी के वो,
पहचान लें ***दिनकरभाई*** *को...*

वैसे भी परब्रह्म तत्त्व तो कभी जाता ही नहीं है, अतः ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज का वर्षों पहले दिया गया कोई भी निर्देश–ज्ञान आज भी उतना ही समाधान करता है–उत्तर देता है। आओ, **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज द्वारा १९६९ में शरद्पूर्णिमा निमित्त** लिखवाया निम्न **सद्विचार** जो कि हमें साकार ब्रह्म **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी का सम्यक् परिचय** के साथ-साथ हमें सच्ची शरद्पूर्णिमा मनाने की **सूझ दे रहा है**–उसे पढ़ें...

दुनिया के तत्त्वज्ञानों और आध्यात्मिक सिद्धांतों में
अक्षरमत या गुणातीतज्ञान की अद्वितीयता, अमापता और अनिवार्यता कई प्रकार से समाई है।
ये सत्य अनुभव ज्ञान के निचोड़ रूप में सभी के परम कल्याण के लिए,
इस पृथ्वी पर भरतखंड में हमेशा अखंडित सुलभ रहेंगे।
महाराज-श्री सहजानंदस्वामी पुरुषोत्तमनारायण की मानवजाति को मौज रूप में यही परम बख़्शिश है।
यह ***परब्रह्मतत्त्व परमसत्यस्वरूप में गुणातीत स्वरूप से प्रगट रह कर***
एकांतिक धर्म की परम सिद्धि भी कराता रहेगा।
यूं यह गुणातीतभावना सनातन, सक्रिय और साकार बनी!
एक रूचि वाले जहाँ हों वहाँ,
गरज रख कर शुद्धभाव से निर्दोषबुद्धि के नियम से भजन, भक्ति और सेवा करने लग पड़ें–
तो, उन्हें जीतेजी ही अक्षरधाम की प्राप्ति सुलभ होती है।
यह रहस्य अब सभी को ज्ञात होता जा रहा है।

पर, मूलवृत्ति एक या दूसरे तरीके से

काम, क्रोध, लोभ, मोह, मान, मद, मत्सर की वृत्ति में समा जाकर

या

देहाभिमान के रूप में

या

ऐश्वर्यप्रताप के मोह में मुक्तों को भी बाधारूप होती रही है;

जिससे कि भगवान का जैसा है वैसा स्वरूप पहचान कर सुख लेने में खोट रहती है।

जबकि, गुणातीतज्ञान में साधक की मूलवृत्ति निर्मूल होकर जीव ब्रह्मरूप होता है

और

जीतेजी ही परब्रह्म का धारक होकर

साधुता के गुणयुक्त जीवन जीकर समग्र सत्संग को दिव्य मानते हुए सुहृद्भाव बढ़ाता जाता है।

नया राजा गद्दी पर बैठता है, तब सभी के गुनाह माफ़ करके उन्हें कैद से छोड़ देता है।

प.पू. स्वामिबापा (गुरुहरि योगीजी महाराज) ने एक बार गोंडल में कहा था कि–

यह गुणातीत राजा जॅल दूध से धुलवा कर छोड़ देता है।

*तो, **साकार ब्रह्म के इस प्राकट्य दिन पर***

उन्हें गद्गद् कंठ से, शुद्धभाव से प्रार्थना करने वालों के सभी गुनाह माफ़ करके

उन्हें अविचल पदवी अर्पण करके, केवल कृपा से

त्यागी या गृही हर एक को ऐसी नैष्कर्म्यसिद्धि प्राप्त करा कर मूर्ति का सुख लेते वे करा दें–ऐसी अभ्यर्थना!

***इसी गुणातीतभावना को प्रगट करके यह दिन मनाएं,** वही होगी उसकी भव्यता*

और

तभी यह दिन सच्ची रीति से मनाया गिना जाए।

– प.पू. काकाजी महाराज, १९६१

सही अर्थ मे कहें तो शरद्पूर्णिमा से ही मानो श्री अक्षरपुरुषोत्तम के उपासकों की **'दीवाली'** शुरू हो जाती है। परंतु , सर्वविदितानुसार दीवाली यानि–चौदह वर्ष के वनवास झेलने के बाद श्री रामचंद्रजी अवध लौटे, उसका उत्सव है और **भक्तों के लिए तो प्रभु के पास कृतज्ञता जाहिर करने का शुभ दिन है;** क्योंकि–**भगवान स्वामिनारायण ने** तो अपने आश्रितों के **जीवन में प्रभु को अखंड रखे संतों द्वारा** उनकी कृपा दृष्टि से, स्पर्श से, प्रसाद से, वाणी और संकल्प से **चिरंजीव दीवाली प्रगटा कर निहाल कर दिया...**

'५० के दशक में **गुरुवर्य योगीजी महाराज ने 'एकता ही एकांतिकभाव'** का सूत्र देकर सत्संग में **'संप-सुहृद्भाव और एकता'** के मर्म **को प.पू. काकाजी द्वारा व्यापक किया। प.पू. काकाजी और प.पू. पप्पाजी ने इसे 'प्रगट का ब्रह्मसूत्र'**

जान कर पू. कांतिकाका के साथ लगातार चालीस वर्ष तक एक 'संयुक्त कुटुंब' की भावना को रखते हुए 'एकता' से जीवन जीने का जीवंत आदर्श दिया – जो कि 'योगी परिवार' की नींव बना और 'गुणातीत समाज' अस्तित्व में आया!

पर, समय के गुजरते उसे भिन्न-भिन्न प्रवाहों में बंटता जाता देखते हुए सं. २०३२ में यानि – आज से बराबर ३२ साल पहले प.पू. काकाजी ने हमें सावधान करने ***नए वर्ष का*** एक ***संदेश*** दिया था। लेकिन, हमारी सुपिरियारिटी की – सुप्रीमसी की महत्त्वाकांक्षा की लगन में कहें या वृत्तियों के आवेग में कहें या अपनी अलग सोच में हम से वो नज़रअंदाज हुआ और... लगता है कि – हमारी बढ़ती जाती आपसी दूरी को देखते हुए अब **हमारे सभी के शिरछत्र गुरुहरि हरिप्रसादस्वामिजी ने वक्त का तक़ाजा जान कर 'संप, सुहृद्‌भाव और एकता' की फिर से मानो हाँक लगाई है। तब, प.पू. काकाजी के उस पत्र को समझ कर अमल करने हम इसे प्रस्तुत कर रहे हैं...**

गुणातीत समाज के सभी शूरवीर योद्धा संतों, युवकों, बहनों तथा सत्संगी बंधुओं को –

नए वर्ष की नई ऊषा पर सभी महामुक्तों की साक्षी में यह संदेश दे रहे हैं।

*सभी वेद और उपनिषदों के शांति और शक्तिपाठ का मूल रहस्य **'दिव्य अद्वैत-एकता'** है।*
अभी तक के २०० वर्ष के इतिहास में शुद्ध गुरुपरंपरा से आए गुणातीत पुरुषों ने
***'संप, सुहृद्‌भाव और एकता'** के ऊपर ही लगातार जोर डाला है।*
उसे ही सच्ची शुद्ध उपासना और पराभक्ति गिना कर,
सनातन एकांतिक धर्मरूप में - शाश्वत्‌धर्म रूप में प्रगट करते रहे हैं।
*इसे **आत्मा का मूलभूत 'स्वधर्म'** कहो या **आध्यात्मिक 'सुहृद्‌भाव'** कहो –*
इन दोनों को एक ही सिक्के के दो पहलू बता कर,
रसात्मक एकता का यह सम्मिलन रसघन सहजानंद की परम मूर्ति में सदैव के लिए स्थापित कर दिया है।
'हो तो एक और दिखते हो दो, इसका मर्म जाने विरला कोई' –
ऐसा दिव्य सम्यक्‌दर्शन कृपा के पात्र को ही होता है।

***गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज** ने –*
२० हज़ार वर्ष के हमारे आध्यात्मिक इतिहास ने जिसकी पुष्टि करी है,
वो अक्षरपुरुषोत्तम की सनातन युगल उपासना की तत्त्वनिष्ठा को केवल कृपा करके मूर्तिमान करी और
सभी के लिए आध्यात्मिक विकास का - आत्यंतिकी मुक्ति का राजमार्ग खुल्ला कर दिया।

गुरुवर्य योगीजी महाराज ने –

- *धाम, धामी और मुक्त की - भगवान, संत और भगवदी की त्रिवेणी संगमरूपी **'स्वरूपनिष्ठा'** दृढ़ कराई,*
- *संतों, युवकों, बहनों और गृहस्थ मंडल में **'संघनिष्ठा'** को व्यापक बनाया,*

❖ *सभी के लिए अक्षरधाम का दिव्य सुख आसान बनाया।*

उनकी केवल करुणा, असीम कृपा और संकल्प से ही आज हम नए युग के दिव्य ज्योतिर्धरों को पहचान पाए हैं; चार पंखुड़ियों वाले कमलरूपी दिव्य समाज की स्थापना कर पाए हैं।

अब हमारी यानि –

(प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी और प.पू. साहेबजी जैसे प्रगट ज्योतिर्धरों की)

अंतर की एक ही तीव्र अभीप्सा है –

'प.पू. बापा के मूलभूत संकल्प से, उनकी कृपा से जगह-जगह एकांतिकों के टोलों का विकास हो जाए

और

वे अन्य को भी इस दिव्य जीवन की झांखी करा कर-प्रतीति करा कर,

स्वतंत्र एवं निर्दोष जीवन जीने सहायरूप बनें।

यही अंतर से गुरुचरणों में फिर प्रार्थना है।'

पर, इसी के साथ हमारी जिम्मेदारी भी खूब बढ़ जाती है।

जैसे-जैसे स्वरूपज्ञान वृद्धि को पाता गया, वैसे-वैसे मूल प्रकृति भी खूब सयानी बनती गई है।

उसकी स्वभावगत् चतुराई और सावधानी ऐन मौके पर व्यक्त होती रहती है।

कभी 'अस्मिता' रूप में मूर्तिमान होकर

अंगभेद, रुचिभेद और सिद्ध पुरुषों में भी समझभेद या स्थितिभेद के आधार पर,

*अनजाने में पू. बापा की **'दिव्य एकता'** के मूलभूत सिद्धांत और रहस्य को धुंधला कर देते हैं,*

हमारे जड़ स्वभाव छलक जाते हैं।

*सो, **अब हम सभी** बहुत ही सावधान रह कर-सतर्क रह कर...*

– किसी भी प्रकार के भेदभाव को प्रगट किए बिना सर्वत्र अविरोधवृत्ति विकसित करें।

*– **'मानसिक एकता'** में से **'दिव्य एकता'** में – 'हम सभी एक और महाराज पर के पर' –*

यूं मूलभूत परब्रह्म चेतना के अस्तित्व को मान्य रखें।

– व्यक्तिभाव छोड़ कर, आध्यात्मिक सुहृद्भाव बढ़ाते रहें।

– खुद ही उसकी शुरुआत करें।

तो, प.पू. बापा का संकल्प सच में जल्दी से जल्दी मूर्त होता – साकार होता लगेगा।

*प्रगट के उपासकों के लिए **'अज्ञान'**, **'ज्ञान'** बन जाता है*

और

*स्वयं की कल्पना और ख्याल के मुताबिक का **'स्वरूपज्ञान'**, **'मूलअज्ञान'** हो जाता है।*

सहजानंद चेतना के अस्तित्व की 'गुणातीत दिव्य भावना' ही रहस्यज्ञान है।

देश-विदेश में ऐसी गुणातीत भावना प्रगटा कर, सर्वदेशीयता प्रगटा कर

***एकांतिकों को** सरलता, समता, नम्रता, पवित्रता और सुहृद्‌भाव जैसे दिव्य गुण प्राप्त कराएं,*

ज्ञानसमाधि में अखंड रह कर पल-पल यह रहस्यज्ञान और सुनृत (योगी गीता) के सिद्धांत से

सभी संबंध वालों में दिव्यभाव दृढ़ करवा कर सम्यक् निर्दोषबुद्धि दृढ़ कराएं

*ऐसी **सभी दिव्य विभूतिपुरुषों को** अंतर से प्रार्थना।*

आओ-आओ!

*हम सभी इस **'सत्य संकल्प'** को पकड़े रख कर,*

अखंड वर्तमान में ही रहने की शुरुआत करें

और...

हमारे ध्येय-निशान की अंतिम मंजिल तक केवल गुरुकृपा से पहुँच जाएं।

'अर्थं साधयामि वा देहं पातयामि' का मतलब समझे हो क्या?

– सुहृद्‌भाव खंडित होता हो, तो सब कुछ छोड़ ही देना है।

– ऐसी सहज सरलता (रख कर), ऐसे दृढ़ निश्चयी बन कर,

केवल प्रभु के ही बल से सचेतन सक्रिय साक्षीभाव से वर्त कर,

***'स्वरूपलक्षी स्थितप्रज्ञता'** सिद्ध करनी है;*

इससे संबंध वाले सभी को शांति, सुख, आनंद और बल देकर हम स्वयं अखंड आनंद में मगन रहेंगे;

– आनंदी स्वभाव सहज बन जाएगा।

*नूतन वर्ष के नए प्रभात से **'सहजानंद का यह परमानंद'** सभी को सुलभ बने, यही गुरुचरणों में प्रार्थना।*

– प.पू. काकाजी महाराज

वि.सं.२०३२

✡✡✡

३० मार्च, २००८ – प.पू. गुरुजी के प्रागट्योत्सव के दिन की प्रातःसभा

प.भ. गिरीशभाई (मुंबई)

...कल सोनाबा-कांतिकाका की फॅमिली का जिक्र करते हुए गुरुजी बता रहे थे कि–किस क़दर गुणातीत समाज में कुटुंबभाव फैला है। हम लास्ट वीक विद्यानगर गए थे, तो ज्योति बहन से मिले थे और हम लोग खाना खा रहे थे, तब सहज ही ज्योति बहन ने बताया कि–कई बातें ऐसी भी हैं कि जो हमें मालूम भी नहीं पड़ी हैं। उसमें ललिता भाभी का एग्ज़ाम्पल देकर बता रहे थे कि जब एग्री ओरियन्ट में फाईनेन्शियल क्राइसिस आई और ८-सी में सोनाबा की हाज़िरी में सब सोने के ज़ेवर निकाल रहे थे, तब बा के मन में ऐसा था कि मेरा और ज्योति बहन एवं तारा बहन के लिए मैंने जो संभाल कर रखा है वो दे देंगे, लेकिन ललिता को

कुछ कहेंगे नहीं। और... उन्होंने तो सब निकाल दिया। काकाजी-पप्पाजी भी वहां खड़े थे। तभी अंदर से ललिता भाभी अपनी सौ तोला सोने की पूँजी लेकर आईं और बा को दे दी कि बा ये मेरा भी आप निकाल दो। पर, काकाजी एकदम बोल उठे कि भाभी तमे कांई विचार कर्यो छे? यानि – आपने कुछ सोचा है? पर भाभी कुछ बोली नहीं। पू. काकाजी ने फिर दोहराया – अरे! आपके तो छः बच्चे हैं, आप सोचो। आप ये सब दे दोगे, फिर आप क्या करोगे? तब ललिता भाभी ने बोला था कि – जो आप दोनों का होगा वो मेरा होगा। **हमारे लिए ऐसा जीवन जीकर उन्होंने हमारे भीतर इस भावना के बीज रोप दिए हैं।**

इस तरह **कुटुंबभाव की बात काकाजी-पप्पाजी – कांतिकाका और बा ने साथ में जी के हमें दी... काकाजी कह कर गए हैं कि ऐसे कुटुंबभाव से जीने वाले २५ कुटुंब तो तैयार हों। यह ज्ञान काकाजी-पप्पाजी ने हमें दिया और उस ज्ञान का अमल दिल्ली में गुरुजी ने किया है। डॉ. महेन्द्र मर्चंट कहते हैं** कि – **उधर गुरुजी ने कुटुंबभाव डॅवलप किया है...**

ये गुणातीत संत लोग हमें कोई न कोई तरीके से बहुत कुछ समझाना चाहते हैं। तो आज गुरुजी के चरणों में ये प्रार्थना है कि काकाजी महाराज – आप जो – जो भी हैं – स्वामिजी हैं, वे हमें जिस तरह जीवन जीवाना चाहते हैं – कुटुंबभाव दृढ़ कराना चाहते हैं, वो कुटुंबभाव हम जल्दी से जल्दी दृढ़ करें...

प.भ. हेमन्तभाई मर्चंट (मुंबई)

...हम यहां गुणातीत समाज में आते हैं, हरिभक्तों के साथ रहते हैं, सेवा भी करते हैं; लेकिन और भी करते रहते हैं। मतलब एक - दूसरे के दोष दूरबीन से देखते हैं। इसलिए हमें किसी का गुण दिखता नहीं है। किसी की कहां कुछ चूक होती है, उसका कहां फॉल्ट होता है – वो देखकर उसको एकदम मॅग्नीफाई कर देते हैं। एक्च्युअली तो उसको हमें मॅग्नीफाइंग ग्लास से नहीं देखना चाहिए – दूरबीन से नहीं देखना चाहिए; हमें तो उसको छोड़ देना चाहिए। पर, वो हम करते नहीं हैं और दूसरों के अवगुण के प्रति हम इस तरह से देखते हैं। सो **गुण के प्रति हमारा ध्यान जाता ही नहीं, क्योंकि हमारे हाथ में पहले से ही दूरबीन है। वो दूरबीन भी हमें रखना चाहिए, लेकिन नेगेटिव के बदले पोज़िटिवनेस अगर देखेंगे तो कहीं से भी हमको उसका गुण मालूम पड़ जायेगा। गुरुजी ने तो पूरा माहौल ही यहां ऐसा रखा है कि कोई किसी को इस तरह से झाँकता नहीं है।** एक-दूसरे के गुण ही देखते हैं और... जिसका जो भी है, जैसे भी है, ऐसा उसे आपने संभाला है। तो, आपके साथ जो भी हैं, वो भी सबको उसी तरह संभाल लेते हैं। '**हमारे फॅमिली मेंबर कैसे भी होंगे – कोई परफॅक्ट नहीं होते**'; इसी तरह वाइडरसॅन्स में हमारा पूरा समाज समझ ले, तो गिरीशभाई ने कुटुंबभाव की जो बात करी वो अपने आप डॅवलप होगा। ५०-६० साल पहले सोनाबा, काकाजी, पप्पाजी, कांतिकाका और उनके साथ जुड़ा हुआ जो पूरा समाज था, उन्हें ये बात करनी नहीं पड़ती थी। मेरे कहने का मतलब यह है कि **बातों के बदले हमारे वर्तन में वो ज्यादा आए, पप्पाजी जो कहते – 'स्पीक लेस वर्क मोर, लॅट यॉर रिजल्ट्स स्पीक फॉर यू'।**

दूसरी बात – इस बार की **'अक्षरधाम'** पत्रिका में भरतभाई ने एक आर्टिकल में अच्छा बताया है कि खाने में नमक भले खूब कम होता है, पर वो अगर नहीं हो तो हमको लगता है कि इसमें कुछ न कुछ तो कमी

है। सब कुछ होगा लेकिन नमक नहीं होगा, तो मज़ा नहीं आता है। और उसी में दूसरी बात भी उन्होंने लिखी है कि **माला में धागा रहता है, वो दिखता नहीं है; लेकिन वो धागे की वजह से माला बनती है।** अगर धागा नहीं है, तो माला नहीं है; सिर्फ मणके हैं। **यूं हमारा जीवन ऐसा हो कि कहीं भी हम दिखें नहीं। योगीजी महाराज कहीं भी जाते थे, सबसे पीछे ऐसे रहते थे कि मुझे कोई पहचान न पाए। हम में कुछ थोड़ा भी होता है, तो 'हम भी कुछ तो हैं' – यह सबको मालूम हो, ऐसा हमारे दिल में रहेगा...**

हमारे यहाँ **पवई में अश्विनभाई** हैं – **अरुणभाई** हैं, **उनका जीवन माला के डोरे जैसा है।** वे इतनी सेवा करते हैं और सब सेवा के भीतर वो इतना जुड़े रहे होते हैं कि हमें पता नहीं चलता कि वो हैं या नहीं हैं। पर, वो नहीं होंगे तो हमारी कोई प्लानिंग पूरी हो ही नहीं सकती।

पप्पाजी अमेरिका गए थे। अश्विनभाई उनकी सेवा में परमेनन्ट थे ही नहीं; लेकिन अश्विनभाई का उनके प्रति भाव ऐसा है कि पप्पाजी ने अचानक कहा कि अश्विन मेरे साथ सेवा में रहेगा। उसके पास कपड़ा या कुछ भी नहीं था। एयरपोर्ट से ही उसको उठा लिया। फिर हमने कपड़े भेज दिए। वहाँ अश्विनभाई का जन्म दिन आया, तो किसी ने पप्पाजी को बताया कि आज अश्विनभाई का जन्म दिन है; और... पप्पाजी के पास होटल में राईटिंग पॅड नहीं था, सो टीशू पेपर के ऊपर आशीर्वाद लिख कर दिए कि–

अश्विनभाई ऐसा साधु है कि पूरा अमेरिका उसके अंदर आ गया!

कल ही किसी ने बात करी थी कि पप्पाजी जल्दी किसी को सर्टिफिकेट देते नहीं हैं। पर, **अश्विनभाई हैं – हमारे ऐसे अरुणभाई हैं, ये वशीभाई हैं, भरतभाई हैं – ये सब गेरुए कपड़े में नहीं हैं, पर ऐसे साधु हैं।** तो, मुक्तों के गुण देखने की दृष्टि डॅवलप हो और उनके पास हम सरल रह पाएं; क्योंकि उनके पास सरल रहना बहुत डिफिकल्ट है। अपने से छोटा होगा, उसको तो हम कैसे भी करके मना लेंगे; अपने से बड़े होंगे, तो उनके पास पूज्यभाव रहेगा ही। लेकिन समकक्ष है - सेईम उम्र के हैं, सेईम कॅटेगरी के हैं – सेईम स्टेटस वाले हैं, उनके पास दासत्व रखना अत्यंत कठिन है। तो, **हम जो सत्संग करते हैं, वो सिर्फ हमारे लिये ही करना है** – ऐसी दिल की शुद्ध भावना हमारे अंदर आ जाए, ऐसा आप हमें आशीर्वाद दीजिए – वही प्रार्थना।

प.भ. अंबालालभाई पटेल (महेसाणा)

काकाजी परिवार के हरेक सदस्य के हृदय सम्राट स्वरूप गुरुजी और यहां आमंत्रित संत महात्माजी, हमारे परिवार के सदस्यों, दीदी, साध्वी बहनों और बालकों –

खूब आनंद है कि **गुरुजी आज ७० साल पार करके ७१वें वर्ष में जा रहे हैं। काकाजी महाराज को, भगवान श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण भगवान को हम प्रार्थना करेंगे कि वे सौ की पूरी सेंच्युरी मार दें और १०० साल तक ऐसे कुशल रह कर हमारे ऊपर ऐसे आशीर्वाद बरसाएं।**

आशीर्वाद के बारे तो कहने की जरुरत नहीं है; क्योंकि मैंने वो खुद महसूस किया है – परछाई दीदी ने महसूस किया है। जब परछाई दीदी की पोज़िशन बहुत खराब थी, तब गुरुजी की और इस दिव्य परिवार की

परछाई दीदी के प्रति की जो सेवा थी, वो मैंने मेरी आंखों से महसूस किया है। मैंने खुद अनुभव किया है कि **स्वामिनारायण के सब भक्तों में यहाँ एक परिवार की भावना है और गुरुजी का एक मोटो है – एक ध्येय है – इनकी ये दिल की एक आशा है कि यहाँ परिवार भले छोटा हो, लेकिन एकजुट होकर रहे और एकजुट की जो भावना जगाई है, उसकी तुलना कहीं भी नहीं हो सकती। गुरुजी एक-एक का ध्यान रखते हैं।** मुझे तो खुद को बहुत महसूस हुआ है। कई बार मुझे आनंद अनुभव करके आंखों में आंसू भी आ जाते हैं। गुरुजी ने मेरे प्रति इतना प्रेम किया है कि मैं और मेरा परिवार कभी नहीं भूल सकते। दिल में आज कुछ शब्द ही नहीं हैं कि मैं गुरुजी के लिए क्या बोलूं? गुरुजी ने मेरे लिये जो काम किया है – उससे मेरा दिल आज बहुत जबरदस्त भर आया है – भावुक हो गया है; आई कॅन नॉट फरगॉट इट। न सिर्फ मेरे लिए – बल्कि गुरुजी हरेक बच्चे का ध्यान रखते हैं। इनके लिए सब समान हैं। इनके परिवार का दुःख वो अपने ऊपर खुद ले लेते हैं...

प.पू. भरतभाई (पवई)

...अब तो बहुत अच्छा हो गया है कि टी.वी. के माध्यम से घर में बैठ कर भी हम ऐसे फंक्शन्स में हाज़िर रह सकते हैं; मगर ऐसे माहौल में जब हम हाज़िर होते हैं, तो अलग-सी वाईब्रेशन्स हमें महसूस होती है और वो हमारा बड़ा भाग्य है कि ऐसे माहौल में हम बैठ जाते हैं और उपस्थित रह सकते हैं। कोई ऐसे-वैसे आ नहीं सकते। कोई कितना भी चाहे कि मुझे जाना है, मगर जब उनका नसीब होता है, तब ही इसमें आ सकते हैं। कुछ वजह से नहीं आ पाए हों, कोई सेवा में रह गए हों और नहीं आ पाए हों वो अलग बात है, मगर ऐसे माहौल में आना और ऐसे संतों के सानिध्य में बैठना, वो हमारे लिए बड़े सौभाग्य की बात है।

योगीजी महाराज गोंडल में विराजमान थे और कोई दो व्यक्ति मंदिर के बाहर खड़े थे। एक भक्त आया तब वो दोनों बोलने लगे कि हमें योगीजी महाराज के दर्शन के लिए लेकर जाओ। वो बोला कि बापा सभा हॉल में बैठे हैं – आप जाकर दर्शन करो। तो वो बोलते हैं कि आप ले जाओ तो हम आ सकते हैं! फिर, वो योगीबापा के पास लेकर गए – दर्शन करवाया। योगी महाराज कुछ पत्र लेखन कर रहे थे; बापा ने उनके सामने देखा तक नहीं! वो ऐसे ही पत्र लेखन करते रहे; दर्शन करके वो तो चले ही गये। बाद में बापा ने हर्षदभाई को पूछा – वो कौन थे मालूम है? वो राम और कृष्ण थे, जो दर्शन करने आए थे; मगर उनको यह दर्शन सुलभ नहीं है। आप थे इसलिए उनको यह दर्शन हुआ! तो इसी तरह से ऐसे संबंध का जो माहात्म्य है, वो बहुत है।

स्वामिनारायण भगवान ने मुक्तानंदस्वामी को बोला कि क्या आपको मालूम है कि आपमें कितना बल है? फिर पूछा कि आप कैसे सत्संगी हो? तब मुक्तानंदस्वामी ने बोला कि **'अमे तो खरेखरा सत्संगी छीए'**। तो महाराज बोले कि ये तुंबडी टूट जाए, वो जोड़नी आती है? मुक्तानंदस्वामी ने कहा – वो तो नहीं आती है। तब महाराज बोले कि फिर आप कैसे बोलते हो कि 'खरे सत्संगी' हो। तुंबडी टूटी हो – उससे इसका कोई मतलब ही नहीं था। मगर बाद में मुक्तानंदस्वामी हाथ जोड़कर बोलते हैं कि ऐसे सत्संगी तो हम नहीं हैं। तो महाराज बोलते हैं कि आपको पता नहीं है, आपकी कलाई में इतनी ताकत है कि यहां से अक्षरधाम कितना दूर है – पर आप चाहो और दृष्टि करो, तो किसी को भी वहाँ पहुंचा सकते हो। कहने का क्या मतलब है? ऐसे

गुणातीत स्वरूपों के सान्निध्य में आना, वो हमारे लिए बहुत बड़े भाग्य की बात है और हम जो भी ऐसे संबंध में आ गए हैं, उनका बहुत ही बड़ा भाग्य है।

स्वामिनारायण भगवान को एक बार सुराखाचर ने प्रार्थना करी कि हे प्रभु! मेरे गांव में आए हो और आप राजी हो गए हो, तो आप ऐसा आशीर्वाद दो कि हमारे गाँव में जो भी मरे, वह धाम में जाए। महाराज ने कहा था–ठीक है। दादाखाचर ने तो उससे बढ़ कर माँगा कि ब्रह्मांड में जब तक आप हो, तब तक जो भी मरे उसको यमदूत लेने को न आए; उसे आप धाम में ही लेकर जाएं। तब महाराज ने कहा–आप क्या बात करते हो? हमें तो ऐसी भावना है कि नरक में भी जो जीव हैं, उनको भी अक्षरधाम, गोलोक, बैकुंठलोक लेकर जाना है; उनको वहां नहीं रहने देना है। ऐसा कह कर स्वरूपानंदस्वामी को बोला कि आप वहां जाओ और वहां जाकर स्वामी ने 'स्वामिनारायण-स्वामिनारायण' मंत्रजाप किया, तो सब चतुर्भुज होकर भूमापुरुष के लोक में चले गए। सिर्फ नाम सुनने से यह हुआ, तो ऐसा दर्शन करने से–उनके सान्निध्य में रहने से कितना बड़ा लाभ हो जाएगा!

ऐसा भव्य संबंध हमें प्राप्त हुआ है, पर हमें पता नहीं है। ये जो गुणातीत स्वरूप हैं वो बार-बार हमें यही बताते हैं कि आप कैसे संबंध में बैठे हो? आपको कौन मिले हैं – वो आपको पता नहीं है। कभी-कभी वशीभाई बोलते हैं कि आपको मुकेश अंबानी ऐसा बोलेंगे कि 'चाय पीने को आ जाओ–एपॉईन्टमेन्ट है'; तो पूरा १० दिन आप उसके कैफ में रहेंगे कि मुझे मुकेश अंबानी के साथ चाय पीने को मिला है। कहने का मतलब क्या है–वो उसका माहात्म्य है। यूं ऐसे गुणातीत स्वरूप जो हैं, उनके संबंध में आना मुश्किल से मुश्किल है; पर वो हमें ऐसे ही मिले हैं। उनका ऐसा माहात्म्य हमें समझ में आ जाए, उसके लिए दो भक्तों–संतों और चार अच्छे हरिभक्तों के साथ आत्मीयता हो जाए, तो हमें वो समझ में आ जाएगा। गुरुजी का माहात्म्य ये है; गुरुजी के साथ जो जुड़े हैं–उनको जो जानने वाले संत हैं–आनंदी दीदी हैं – जो उनको पहचानते हैं, उनकी संगत से गुरुजी को समझ पाएंगे। गुरुजी की सब आज्ञा अच्छी लगेगी भी नहीं, मगर वो समझाएंगे कि ये आज्ञा के पीछे ये महत्त्व है। इसलिए ऐसे संतों का सान्निध्य–वो बहुत बड़ी बात है और वो हमें समझाएंगे कि ऐसा करना है।

आज हम ऐसी प्रार्थना करें कि उनसे मिले हुए ऐसे जो साधु हैं–ऐसे भगवदी हैं – जिनके बारे काकाजी बोलते कि हमने 'भगवदी' का तत्त्व एड किया–मतलब, ये किया कि उनके संग से आप संत को अच्छी तरह से पहचान पाओ। आप कहीं मार्ग से उतर जाते होंगे, तो वो फिर से आपको सीधे रास्ते पर चढ़ा देंगे और ये करेंगे तो उसकी प्रसन्नता भी जल्दी मिलेगी–हम उनको पहचान पाएंगे। **काकाजी ने ऐसी जो भी टॅक्नीक दी है, वो टॅक्नीक का रहस्य समझना मुश्किल है।** कल कोई बात कर रहा था कि काकाजी का प्रवचन हम सुनते हैं और बाद में उसके ऊपर गुरुजी बात करते हैं तो समझ में आती है। गुरुजी कहते हैं कि काकाजी का एक प्रवचन चालू होता है, तो सब लोग बोलते हैं कि गुरुजी के समझाने में – प्रवचन पूरा होने में अभी एक साल जायेगा। क्योंकि दो सॅन्टॅन्सीस काकाजी बोलेंगे उसे बारीकी से-डीटेइल से गुरुजी बताएंगे, तभी पता चलता है कि ये काकाजी ने क्या बताया है।

इसी बात को काकाजी दूसरी तरह से हमें यूं बताते थे कि – 'हम जब लंडन स्कूल ऑफ इकॉनोमिक्स में पढ़ते थे, वहां मास्टर जे.एन. जेम्स इकोनोमिक्स पढ़ाते थे। उसके लॅक्चर सुनते थे, मगर उसकी दो तीन बुक पढ़कर नहीं गए होते थे, तो उसका लेक्चर समझ में ही नहीं आता था कि वो क्या बोलकर चला गया। जब इतना पढ़कर जाते थे और बाद में बैठते, तो उसका लेक्चर समझ में आता था।'

...ऐसे जो संत हैं – गुणातीत स्वरूप हैं, उनका हमें ये जोग हुआ ये सबसे बड़ी बात है। वे हमें आज ऐसा मार्गदर्शन दे रहे हैं। हमें ऐसा जीवन जीने के लिए कह रहे हैं कि आप यही जीओ – यही करो। हमें तो पता नहीं है; इसलिये कहते हैं न कि वे जो कहते हैं, वहां दो हाथ जोड़ कर रहो। काकाजी बताते थे कि आपको भींत (दीवार) के पार नहीं दिखता, मगर हमें दिखाई पड़ता है; इसलिए हम जो बोलते हैं – वो आप करो। ऐसे संत को बहुत आगे का दिखता है, हमें दिखाई नहीं देता।

...कल मुझे **बहुत खुशी हुई कि इधर जो भक्त लोग हैं - गुरुजी से जुड़े हैं, उनका गुरुजी को विश्वास है कि मैं जो बोलूंगा, वो सब लोग मानकर अहोभाव से स्वीकार करेंगे कि मैंने जो कहा है, वही सही है। हमें तो ऐसा भाव है ही कि गुरुजी आप जो बोलेंगे वो हम करेंगे, मगर अपने गुरु को ऐसा विश्वास आना – वो हमारी सबसे बड़ी एचीवमेन्ट है।** इसलिए सब भक्तों को भी धन्यवाद है कि उन्होंने गुरुजी के प्रति ऐसा भाव रखा है, जिससे गुरुजी को ऐसा विश्वास आया है। गुरुजी की हमारे ऊपर यह बहुत बड़ी ग्रेस है - कृपा है कि हमें ऐसा स्वीकार किया... ये विश्वास दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही – बढ़ता ही जाए और **सच्चे अर्थ** में ऐसा संबंध दृढ़ हो जाए – ऐसी प्रार्थना करते हैं। सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी (सांकरदा)

अभी-अभी भरतभाई ने बताया कि काकाजी बोलते थे कि – **काकाजी और पप्पाजी वर्तन में मानते हैं – बोलने में नहीं।** इसलिए मेरे मन में एक बात आई कि हम भी इसी सभा में कुछ प्रॅक्टिकल बात करें। भरतभाई ने जो बात बताई वो बात आज भी यहां मौजूद है; क्योंकि काकाजी और पप्पाजी ने ये बताया है कि आज ये बोलने वाला जो है वो स्वरूपानंदस्वामी का अवतार है। तो, वही स्वरूपानंदस्वामी आज आप सबके लिए प्रार्थना करते हैं कि **आज आप सब 'अक्षरधाम' में बैठे हुए हैं और 'अक्षरधाम' में ही रहेंगे** – बस इतना ही मेरे को कहना है। सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

प.पू. वशीभाई (पवई)

'काका' नाम सत्संग को फर्स्ट टाईम अक्षरविहारीस्वामिजी और प्रफुल्लभाई ने दिया। 'पप्पा' और 'काका'! इससे ज्यादा और क्या हो सकता है कि अक्षरविहारीस्वामिजी सामने से माईक मांग कर हमको इतना आशीर्वाद दे देवें और सामने से हम पर ऐसी कृपा बरसा देवें। इससे ज्यादा खुशी, इससे ज्यादा मांगने की कोई अपेक्षा रहती ही नहीं... सामने से कहा कि जाओ तुमको अक्षरधाम का सुख, शांति, बल, आनंद – सब कुछ! बाहर का आदमी क्या मांगेगा कि मेरा कोई व्यावहारिक काम हो जाए; पर हम तो यहां सब भक्त बैठे हैं। गुरुजी ने भी दो दिन से यहां शिविर का वातावरण कर दिया है। कौशिकभाई ने भी वो अच्छा निकाला तो गुरुजी ने – साहेबजी ने सब रहस्य वार्ता करी।

हमारी गुणातीत परंपरा जो है, वो दासत्व की परंपरा है। एक बार हरिप्रसादस्वामिजी पवई मंदिर आए थे, तो वहां सब मूर्ति के दर्शन करते-करते राधाकृष्णजी की मूर्ति के पास आए; तब बोले कि कृष्ण भगवान ने गीता में सांख्य योग, ज्ञान योग, विज्ञान योग – सब योग बताया, लेकिन **दासत्व का योग फर्स्ट टाइम पृथ्वी पर गुणातीतानंदस्वामी ने बताया।** वो जो गुणातीत परंपरा की कल बात हुई वो यूनीक बात है। हम खूब भाग्यशाली हैं; जैसे भरतभाई ने बताया, नॉर्मली लंडन स्कूल ऑफ इकोनोमिक्स में एडमीशन ही नहीं मिलता है। मैंने काकाजी को पूछा था; अभी भी ५३ लाख फी है। नॉर्मली कितने जन्म राह देखोगे? हमें तो मुफ्त में, और...हम तो कितने भाग्यशाली हैं कि उनके साथ रहते हैं! काकाजी बोलते थे कि बड़े पुरुष मिलना मुश्किल है। मिले तो पहचानना मुश्किल है। पहचाने तो उनके साथ रहना और मुश्किल है और साथ रहें तो उनके प्रति अखंड दिव्यभाव रखना और मुश्किल है। और... **अखंड दिव्यभाव रहे तो हम ऑटोमॅटिक दिव्य हो जाते हैं।** अभी ३ फरवरी को काकाजी का साक्षात्कार दिन मना रहे थे, तो **दिनकरभाई और भरतभाई ने बोला** कि– ***साक्षात्कार काकाजी को ही नहीं, आपको सबको हो गया है; लेकिन हमारा क्या है कि हम भूल जाते हैं।*** जब कोई प्रसंग आता है, ऐसा कुछ हो जाता है तब याद आ जाता है; जैसे आज प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी ने आशीर्वाद दिया, पप्पाजी ने जैसा आशीर्वाद दिया था कि – *अक्षरधाम की समाधि में आप अखंड रहो।* यूं ऐसा आशीर्वाद सामने से दे दिया और **काकाजी ने जो 'भगवदी' की बात करी थी, वो भी एक्च्युअली वचनामृत और स्वामी की बात – दोनों में है...** काकाजी यहां दिल्ली आते थे तो बोलते थे कि – मैं तो लुहार हूँ, चाबियां देता हूँ; लेकिन आप चाबियाँ गवाँ देते हो। इसलिए नई-नई चाबियाँ देता रहता हूँ। वो क्या? – तो नई-नई टॅक्नीक देते थे। ही (प.पू. काकाजी) सॅईड – यू स्टार्ट वीथ टु पीपल – यू स्टार्ट वीथ यॉर वाईफ। हमारे जादवजी भाई को काकाजी ने बोला कि तुम तुम्हारे घर से चालू करो। उसने पूछा 'घर से' का क्या मतलब? तो काकाजी बोले कि यू स्टार्ट वीथ यॉर वाईफ। उसने पूछा – हाऊ? तो काकाजी ने समझाया कि तुम घर पर रहते हो, तो वाइफ को 'हाँ' बोलने का। लेकिन भाव ये रखना कि हे काकाजी, हे स्वामिजी, हे स्वामिनारायण भगवान आप यहाँ प्रगट हो। बाहर निकलो तो तुम बोलोगे कि टॅक्सी में लेकर जायेंगे, वाईफ बोलेगी – नहीं, बस में जाने का है। तो बोलो 'हाँजी', बस में जाना है। **घर में अगर आप झगड़ा करते हो, तो आप सत्संगी नहीं हो।** देखो, काकाजी की बात घर से चालू होती है। एक बार स्वामिजी ने उनकी आत्मीय शिविर में बोला था कि – *घरमां जीत्यो, ते जगत जीत्यो।* आदमी पूरी दुनिया को जीत के आता है, लेकिन वाईफ के पास हार जाता है। वहां गुस्सा कर देता है या तो कुछ भी गड़बड़ हो जाती है। तो, काकाजी ने ये रूट बताया।

अभी गिरिशभाई ने अच्छा बताया जो गुरुजी ने बताया कि हम बोले कि – 'बहुत सत्संग हो गया, लाख आदमी आ गया, बहुत बड़ा फंक्शन हो गया – वैगरह... पर, अभी अक्षरविहारीस्वामिजी ने जो आशीर्वाद दिया वो उससे ज्यादा है न?' धी वॅल्युएशन – मेज़रमेन्ट इज नॉट धेट। **काकाजी एक एग्ज़ाम्पल देते थे। कोयला तोलने का तराजू और हीरे को तोलने का स्केईल अलग होता है। तो, ये कुटुंबभाव वाली जो बात है – बोलना आसान है, लेकिन चलना मुश्किल है। फिर भी, इन पुरुषों ने तो करना भी आसान**

कर दिया; जैसे कल रात को बोला कि इतना अच्छा 'अक्षरज्योति' बना दिया, अब सुखपाल में भगवान भजने हैं। ऐसा आसान कर दिया कि हमको ऐसा नहीं लगे कि साधना कर रहे हैं। वर्ना, पहले क्या था कि साधना करनी है तो जंगल में जाओ, बाल कटवा दो। अभी भी जैनों में लोंचन बोलते हैं। यहाँ लोंचन नहीं – ऐसी **रिगरस तपस्या नहीं, फिर भी आप ब्रह्मस्वरूप हो।**

नॉर्मली **सब बोलते हैं – स्वर्ग का सुख मरने के बाद मिलेगा और यहां तो जीतेजी ये सुख! इसलिए काकाजी ने 'मैत्रीभाव' की टॅक्नीक दी है – चाबी दी है।** यू स्टार्ट वीथ यॉर फेमिली। लेकिन, जैसे नक्की करोगे – भरतभाई एक अच्छा प्रसंग बताते हैं – एक बार उन्होंने नक्की किया कि अब काकाजी जो बोले उस बारे एकदम स्ट्रोंग रहना है, एक बार भी फेईल नहीं होना है। काकाजी बाहर जाते, तो साथ में कुछ ज्यादा रखते नहीं थे – स्ट्रेपसिल्स और नैपकीन साथ में रखते थे। भरतभाई सेवक के रूप में साथ में थे। तो गाड़ी चली कि – थोड़ी देर बाद काकाजी ने भरतभाई को बोला स्ट्रेपसिल्स लाओ। सब था, लेकिन स्ट्रेपसिल्स ही रह गई थी! यूं **आध्यात्मिकता में स्टेज पर बोलना – लेक्चर देना एकदम आसान है। पर, चालू करेंगे, तो पहली बॉल पर ही अपने को क्लीन बोल्ड कर देंगे। वो विकेट न जाए इसीलिए आज ये सब बड़े-बड़े संत जो हैं, वे हमको आशीर्वाद दें कि हम ऐसे अखंड-अखंड-अखंड समाधि में रहें...**

इसलिए **भरतभाई ने एकदम ठीक बोला** कि – **ऐसे – बड़े पुरुष को समझने के लिए उसके साथ जो संलग्न है उनके साथ रहो, तो आपको बहुत फायदा है। जैसे यहाँ, जो दीदी के पास होकर आते हैं, उनका सब काम - काज इज़ीली हो जाता है। अक्षरविहारीस्वामिजी को जानना हो तो, निष्कामस्वामी के पास जाना पड़े, साहेब को जानना हो, तो शांतिभाई-अश्विनभाई के पास जायेंगे तो आपको इज़ी पड़ेगा।**

...**भक्तों को आपका इतना विश्वास आना स्वामिजी! इट्स ए वेरी बिग डील।** अक्षरविहारीस्वामिजी ने ऐसे-वैसे आशीर्वाद नहीं दिये हैं। आपको इतना जानकर, आपको इतना मानकर उनके दिल से निकल गया – फिसल गया। तो सचमुच यही अक्षरधाम की सभा हो गई! **काकाजी ने ये इतनी अच्छी फर्स्टक्लास टॅक्नीक दी है और गुरुजी वो टॅक्नीक बहुत स्मार्टली इम्प्लीमेंट करते हैं।** अभी इधर, जहाँ वे बैठते हैं – वहाँ हॉल में ये सब मूर्तियां लगाई हैं। काकाजी का एक सूत्र था – **'बम्बावाला-बम्बावाला-बम्बावाला' को याद करके 'स्वामिनारायण-स्वामिनारायण' पुकार करो।** तो ये सब बम्बावाला भी इधर रख दिया। कोई भी 'बम्बावाला' को पकड़ो और धुन करो: 'स्वामिनारायण-स्वामिनारायण'।

काकाजी कहते कि तुम्हें मुझ से हेत है, लेकिन तुम मुझे पप्पाजी में – स्वामिजी में देखो तो मैं बहुत खुश। एक्च्युअली गुरुजी भी ये बात दोहराते हैं। पर वे हमको ऐसा मिस देकर दिखाते हैं। वर्ना, इनको त्रिमूर्ति बनवाने की क्या जरुरत? ऐसी मूर्ति द्वारा वे बोलते हैं कि देखो – आप आओ तो पहले पप्पाजी दिखते हैं, बीच में आओ तो काकाजी दिखते हैं और आगे जाओ तो स्वामिजी दिखते हैं। काकाजी जो कहना चाहते थे, वो एकदम सरस – सुलभ रख दिया... यूं किसी को पता भी नहीं चले और...

काकाजी की बात पकड़ कर गुरुजी ऐसी अलग-अलग चाबियाँ याद कराते रहते हैं और जैसा भरतभाई ने बोला – वे इतनी क्रियेटिवली करते हैं कि ट्वेंटी फर्स्ट सेंच्युरी के आदमी को भी कनविन्सिंग लगें। **गुरुजी जो भी काम लेते हैं वो १०० प्रतिशत फिट करते हैं।** गुरुजी का सीनियर बी.एस.सी. का एक पेपर था। गुरुजी मनमौजी हैं; वैसे मन में आ गया तो कुछ भी कर देंगे, नहीं तो तुम कहते-कहते मर जाओ तो भी नहीं करेंगे। आख़िरी पेपर एसे का था और वो पेपर में चार एसेस लिखने होते थे। ही एटेन्डेड ओन्ली वन क्वेश्चन। पर, वो एसे इन्होंने इतना एग्झॉस्टिव और फेंटास्टिक लिखा था कि एग्झामिनर ने इनको उस एसे को ही ३३ मार्क्स दे दिए एन्ड ही पास्ड! यूं **गुरुजी में इतनी परफॅक्टनेस! उनको १९-२० नहीं चलता।** और... दूसरा **गुरुजी का ये है कि** – जैसे स्वामिजी अभी सबको अपने शिविर में मुँहपाठ करवाते हैं कि – **'भगवान के बल से जीओ'**। कोई भी प्रसंग आ जाये, कुछ भी काम आ जाए – अभी एक परछाई का प्रसंग हो ही गया था और ऑल ऑफ ए सडन गौरी को एकदम बड़ी बीमारी आई; हम तो कंटाल जाएं कि क्या ये घड़ी-घड़ी बीमारी? पर, **गुरुजी सबको समझाते हैं कि भगवान का बल लो – भजन करो और वो भी करते हैं; तो महाराज ऐसे प्रसंग सॉल्व कर देते हैं।** परछाई के केस में पटेल साहब, डॉ. परिमल वगैरह, कितने नए – नए उनके साथ जुड़ गए। अभी कौशिकभाई का जैसे हुआ; उसको ऑपरॅशन करना पड़ता, बट फॉर्च्युनेटली ट्रॅक्शन से ही वो ठीक हो गए! लेकिन **हर प्रसंग पर गुरुजी खुद भजन का सहारा लेते हैं और भक्तों को भी यही सिखाते हैं।** हमारे ये सेठ – उसको बदलना – हॅट्स ऑफ टु यू; वो जहां-जहां हैं! गुटके के तो ऐसे इश्की कि उसके बिना उन्हें चले ही नहीं। पर, गार्गी दीदी के एक बार कहने पर उस दिन से उन्होंने वो छोड़ दिया! वो छूट ही गया इतना ही नहीं, सत्संग में एक अपनापन इनको हो गया। गुरुजी उन्हें हक़ से कह सकते हैं... **ये गुरुजी क्या करते हैं? सिर्फ लाईन को मोड़ देते हैं। कोई ट्रेन फास्ट हो और... उसको राईट ट्रेक पर मोड़ दो, तो फिर वो उस ट्रेक पर भी फास्ट चलती है।** आशीष को मैं बचपन से जानता हूँ। लेकिन आशीष को उन्होंने इतना इन्टॅलीजेंट्ली और इतना पावरफुली यूज़ किया है कि उसकी क्रियेटीविटी निखर आई। आशीष जो ये एनीमेशन का करता है, वो विचार आना ही एक बहुत बड़ी बात है। ऐसे बहुत भक्त हैं। काकाजी का एक शब्द था 'डाईरेक्शनल डायनेमीझम'। तो गुरुजी ने वो भक्तों के ऊपर लागू किया है। हमारे यहां एक ज्योतिप्रकाश करके था – मोल्ड डाई बनाता था, बहुत एक्सपर्ट था वो। वो दिल्ली आ रहा था और... भक्तहृदय था, तो मैंने कहा – तुम दिल्ली जा रहे हो, तो हमारे मंदिर जाकर आना। वो यहाँ से लौट कर मुझे बोला कि कोई भी आदमी आता है, तो **तुम्हारे गुरुजी तुरंत समझ जाते हैं कि इसको क्या चाहिए...** सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

प.पू. गुरुजी

वर्षो पहले पप्पाजी ने बताया था कि – हम प्रह्लादजी की बात करते हैं कि वे अतितप्त खंभे को चिपके। पर, **भगवान ऐसे दयालु हैं कि कुछ न कुछ इन्डीकेशन वे एड्वान्स में दे ही देते हैं।** पर, फिर **हमें वो पकड़ना पड़ता है। हमारी इनर्शया (जड़ता) के कारण – वृत्ति के कारण हम न पकड़ें, वो बात अलग**

है। प्रह्लाद को भगवान ने गर्म तपते खंभे पर चलती चीटिंयाँ दिखाई थीं, तब प्रह्लाद को हुआ कि हर्जा नहीं है। वर्ना अंधेरे में छलांग लगाना मुश्किल पड़ जाता है...

...काफी टाइम से **मुझे 'काशी विश्वनाथ' के दर्शन करने जाना था।** आप जानते हो, वहां अपना कोई परिचित है नहीं। फिर भी, मुझे हुआ कि – भले परिचय नहीं हो, धर्मशाला में रह कर एक दिन में वापिस आ जाएंगे; लेकिन काशी विश्वनाथ के दर्शन करके आना है। फिर भी **मन में ऐसा रहता था कि भले, जाना है पर अपना मिशन भी चूकना नहीं चाहिए।** सिर्फ **बनारस घूम के आएं, उसके बदले दो - तीन जनों के जीवन में स्वामिनारायण भगवान बस जाएं; तो भगवान की एक सेवा हो जाएगी।**

हुआ क्या कि उन्हीं दिनों हम जयपुर में प्रणीत रावतजी के यहाँ गए थे। वहाँ रावतजी के फ्रॅन्ड के यहाँ उनके फ्रॅन्ड आए थे और... कहा होगा कि मेरे फ्रॅन्ड के घर ऐसे संत लोग आए हैं, आप भी चलो। तो वे भी आए थे। उन्हें हमने पूछा कि – कौल, आप कहाँ रहते हो? वे बोले – 'बनारस'। दो दिन के बाद हम बनारस जाने वाले ही थे। सो, मैंने पूछा कि – आप कब बनारस लौटोगे? उन्होंने कहा – आज शाम को लौट रहा हूँ; मुझे हो गया कि महाराज ने इन्हें भेज दिया ही है। और... इनको भी इतने सारे बनारस में हमारे साथ ऐसा लगाव हो गया कि आज वो यहाँ आ भी गए हैं। ये एक मिरेक्ल जैसा हो गया! पर, ये कौल पूर्व के होंगे; अधरवाईज़ इट कॅन नॉट हॅपन सो। वैसे वे बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी में प्रॉफेसर हैं...

प.भ. अशोकजी कौल (बनारस)

मेरे लिए सौभाग्य की बात है कि – मैं आज ये दर्शन कर पाया। मैं तो यूनिवर्सिटी का टीचर हूँ। हम लोग बेज़ीकली कश्मीर के थे। १९७५ में पढ़ने के लिए बनारस यूनिवर्सिटी में आया। वहीं एम.ए., पी.एच.डी. होने के बाद नौकरी लग गई। फिर कश्मीर में ऐसे हालात उभर कर आ गए कि पिताजी – माँ सब हमारे साथ रहने लगे। तब से हम खास 'बनारसी' हो गए। मां-बाप की सेवा तो करते ही थे। माय फाधर इज़ नाईन्टी सॅवन, मधर नाईन्टी थ्री में चली गई। पर मधरइन लॉ मेरे साथ हैं। मंदिर तो जाते थे, लेकिन ऐसा कोई आकर्षण इस तरह का नहीं था कि यहां जाना चाहिए – वहां जाना चाहिए। घरवाले सब टी.वी. पर बापू महाराज, मुरारीबापू के प्रवचन सुनते थे। लेकिन मैं मनमौजी इन्सान – यूनिवर्सिटी में पढ़ाया और लौट आया। ऐसा कुछ खास भी नहीं था; ऐसे कोई प्रॉब्लम भी नहीं थी। खामोश-सा परिवार है। हम मियाँ-बीबी दोनों नौकरी करते हैं।

अचानक मुझे जयपुर एक लेक्चर देने जाना था। तो वहां पर **प्रोफेसर मोदी मेरे मित्र हैं; उन्होंने कहा – ब्रेकफास्ट पर आ जाइए।** ब्रेकफास्ट पर आने के बाद कहा कि – रावत साहेब एक पब्लिशर हैं, वहां हमें लंच पर बुलाया है; आप भी चलिए। हमने कहा – अरे! हमको आज जाना है, जाने दीजिए। उन्होंने कहा आप खाना खाकर तो जाइए; **स्वामिजी के दर्शन भी हो जायेंगे।**

तो, **पहले मुझे पिताजी ने कहा था कि अब आपकी उमर आ गई है। अब आप ५० के ऊपर हो गये; दुनियादारी ठीक-ठाक है, आपका बाकी सब कुछ ठीक भी है; अब तुम पूजा भी किया करो।** मैंने कहा पापा अभी ५-१० साल हैं; कुछ किताबें वगैरह लिखने का मन है। वन्स आई फिनीश धीस वर्क, धेन आई वील गो टु इट। उन्होंने कहा था 'नहीं-नहीं', तुम्हारा अभी समय आया है। **तो, पिताजी की वाणी मुझे क्लीक**

होती जा रही थी और... फिर जयपुर गए। जयपुर में ज्यूं ही गया, तो स्वामिजी का कारवाँ आ गया! हमने सोचा था – दो मिनिट के लिए प्रणाम कर लेंगे। और... उन्होंने कहा हमें आना है आपके पास। हमने कहा – हम तो अभी शाम को बनारस जा रहे हैं और आप कहां आएंगे? उन्होंने कहा – नहीं, वी विल कम। उन्होंने जो कहा सर आँखों पर। ज्यूं ही हम बनारस पहुंचे, तो उन्होंने टेलीफोन कर दिया कि वे आ रहे हैं। लेकिन तब प्रोग्राम का पता नहीं था। पर फिर फोन आया कि स्वामिजी आज आएंगे और आपके यहां कॉफी पीएंगे।

और... जाते-जाते **उन्होंने कहा कि देखो ये जो सूर्य आप देख रहे हैं उसमें रोशनी है – सब कुछ है और प्रगट है, आप उसको देख रहे हैं – महसूस कर रहे हैं। मैंने कहा हां बिल्कुल महसूस कर रहा हूँ। मगर एक कमरे में उसकी पेंईटिंग रखी गई हो, तो उसका ऐसा एहसास नहीं होगा, जो इसका है। यह बात और फिर पिताजी का ये कहना कि तुम भी अपना राह बदल दो। सो, मैंने सोचा – चलिए आप ही हमारे सूरज हैं, आप ही भगवान हैं** और... वो कार में चले गए। मैंने २-३ प्रोफेसर जो जानते थे, उन्हें बुलाया था और उन्हें कहा कि इन्हें बनारस यूनिवर्सिटी देखनी है। सो, वे उनके साथ चले गए। **पर, उसके बाद मुझे लगातार – पता नहीं क्यों, एहसास-सा रहा है कि हु एम आई, वॉट इज़ माई लॉग इन?**

...आजकल ऐसा ज़माना आ गया है, जिसे कहते हैं कि मेन्युफेक्चर्ड अनसर्टन्टीज़। वी हॅव क्रियेटेड अनसर्टन्टीज़। आप घर से बाहर निकलेंगे तो इट इज़ ऑल धी अधर्स। घर से बाहर निकलेंगे तो हु एम आई? मेरी प्रेडिक्टिबिल्टी नहीं है... गांव-शहरों में रिश्ते टूट रहे हैं। कीनशिप इज़ गॉन। अब एक बच्चा है, वो जानता नहीं मासी-बुआ वो सब क्या है। वॉट इज़ धीस? ये प्राइमरी का टूट जाना, मॅरेज का ब्रेक हो जाना-इसने एक किस्म की क्राइसिस पैदा कर दी है। क्राइसिस का एन्ड अब क्या रहेगा? कहां हम जायेंगे? किसके पास रोएंगे? कौन सुनेंगे? यू हेव टु शेयर। जब तक व्यक्ति शेयर नहीं करेगा – क्या है? प्रोडक्टिविटी नहीं होगी; प्रोडक्टिविटी से फेईथ बन जाता है, उस फेईथ से कॉन्फीडन्ट आता है। अगर फेईथ एण्ड डायलॉग नहीं है और उन रिश्तों की प्रोडक्टिविटी नहीं है – तो हम कहां जाएंगे? इसलिये **मुझे लग रहा है ये सत्संग जो है, ये स्वामिजी जो हैं – वो बिल्कुल अलग है। कोई लस्ट नहीं है, कोई इन्ट्रेस्ट नहीं है। आप बंधे जा रहे हैं और ऐसे बंधन से बंधे जा रहे हैं, जहां वायॉलन्स ना हो। वर्ना और भी धर्म हैं, और भी पावरफुल वर्ल्ड है, रिलिजियन्स भी पावरफुल है। बट इट विल कन्फ्रन्ट कल्चर।** कॅपीटालिस्ट तो वायॉलन्स क्रियेट करता है। यहाँ ऐसा कुछ नज़र आता है – जहां वायॉलन्स ना हो और बंधन में भी बंधे। पहले प्राइमरी ग्रुप्स हुआ करते थे। गाँव में, गाँव की नदिया, आम की छइयां, उसमें वो मोहब्बतें... अगर वो फिर दुबारा लौट कर आ जाएं और वो कोई निष्कामभाव से ले आए – उससे बढ़कर क्या? तो, मुझे लगा कि **परहॅप्स धीस इज़ ए पाथ। ये मौका मुझे ईश्वर ने दिया है। इसलिए मैं आज खिंच कर आ गया...**

आपको बहुत हार्दिक धन्यवाद और मैं आपको प्रणाम करता हूँ और आशा करता हूँ कि आप लॉग-इन रहेंगे। हम भी कम्प्यूटर खोलें और लॉग-इन मिल जायेगा – हु एम आई, हु आर धे और हु आर ऑल?

(ध्वनिमुद्रण पर आधारित)

✡✡✡

शेष अगले अंक में...

'श्रवण, मनन, निदिध्यासन'

* **खून का पानी हो जाए, इतना स्वामिजी - साहेब घूमते हैं...** अबकी बार की पत्रिका पढ़ कर मैं हैरान हो गया। अभी मार्च में मेरे जन्मदिन पर स्वामिजी दिल्ली आए, फिर यहाँ से पंजाब गए और वहाँ से हरिधाम लौटे ही थे कि दूसरे दिन तो सारी रात की ट्रावॅलिंग करके समढियाळा शिविर में पहुँचे! **जीवों के कल्याण के लिए वे कितना परिश्रम करते हैं?**

* **अभिषेक** को पता लगता है कि कल गुरुजी जल्दी उठने वाले हैं या कहीं जाने वाले हैं, तो वो जल्दी उठकर मेरे से पहले तैयार होकर बैठ जायेगा। **भले उम्र में छोटा है, पर सही मायने में तो ऐसे चलने हम आए हैं...**
जो अपनी गरज से भगवान भजने निकला होगा न, वो यूं बिहेव करेगा। वर्ना, साधु होने के बाद या सेवक होने के बाद भी हम एस्कॅपीज़म ढूंढते रहते हैं।

* ये रिफ्रेशर कोर्स की शिविर है; इसमें से **ऐसी बातों को पकड़ कर हम अपने आपको बदलें। भले हमारा मिसबिहॅव देख कर कोई बोलेगा नहीं, क्योंकि अपना सत्संग 'महिमा' का है; लेकिन हमारा प्रभाव किसी के दिल पर नहीं पड़ेगा।** निष्कुलानंदस्वामी ने एक भजन में लिखा है –
'मोटा थवानुं मनमां रे, दलमां घणो डोड;
पण तेवा गुण नथी तनमां रे, कां करे तुं कोड...
(बड़ा बनने के बहुत अरमान मन में रखता है, लेकिन तुझ में ऐसे गुण नहीं हैं; तो क्यों फिज़ूल के मनसूबे रखता है?)'

* **'योगीजी महाराज और काकाजी का जो बगीचा है, उसको बढ़ाना है'– इसी भावना से सभी की सेवा किया करनी है।**

* ये शिविर में से यह खोजें कि – हम मन्दिर में रहते हैं; पर क्या घर में झंझट होया करती थी, सो उससे एस्कॅप होने के लिए तो नहीं आए?
अच्छा है यहां पर, कि यहाँ निभा लेते हैं। निभ तो जाएंगे, लेकिन मन्दिर में एक 'पुअर बुर' बन कर रहेंगे; किसी पर हमारा प्रभाव नहीं पड़ेगा।
प्रभाव उसी का पड़ेगा –
जो 'सेवक' बनकर रहेगा,
जो 'गरीब' बनकर रहेगा,
जो झुक कर रहेगा,
जो संत के इशारे पर चलेगा।
संत की ये मर्जी है और ऐसा ही करना है – यह जो पकड़े रखेगा, उसका प्रभाव पड़ेगा – बिना कहे पड़ेगा!
बाकी हम कितना ही रौब झाड़ के, शो - शा करके ठाट से किसी पर प्रभाव डालने जाएंगे – तो भी प्रभाव नहीं पड़ेगा – महाराज पड़ने ही नहीं देंगे।

* गुजराती में कहावत है कि
'सेवा करे एने मेवा मळे' (जो सेवा करे उसे मेवा मिले।)
हमें मेवा खाना है, लेकिन सेवा नहीं करनी है। **पप्पाजी बोलते थे** कि – 'लोट फाकवो अने हसवुं – ए बन्ने केम बने?' (हंसना और आटा फांकना, ये दोनों काम एक साथ कैसे हों?)

* **काकाजी ने तो सर्टिफिकेट दे दिया** कि तुम यहाँ इतने उमंग से रोज आते हो – **'अक्षरधाम के मुक्त हो...'**
ऐसा अच्छा स्थान, ऐसा अच्छा सत्संग, ऐसे अच्छे भगवान मिल गए; तो और कहीं क्यों घूमा करना?

* **इन दिव्य पुरुषों की महिमा समझ में नहीं आती, उससे बढ़ कर कोई 'पाप' नहीं है।** अपनी शापित बुद्धि आड़े आती है।

ऐसी एक बात – पाप की बात 'ब्रह्मप्रवाह' में भी **काकाजी ने** लिखी है। **बड़े पुरुष को राजी ना करें – उनकी मर्जी के मुताबिक नहीं वर्ता जाए, उससे बढ़ कर कोई 'पाप' नहीं है।**

बड़े पुरुष नाराज़ तो होते ही नहीं; उन्हें हक़ ही नहीं है, लेकिन उनको राजी नहीं कर सके, उससे बड़ा कोई 'पाप' नहीं है।

* कथावार्ता एकचित्त से सुनना। ऐसे समझाने वाले संत मिले हैं और तब भी हम समझते नहीं हैं। इतना टोक-टोक के कहने वाले मिले हैं, फिर यहाँ रह कर खामखाह क्यों अपना समय बरबाद करते हैं? फिर बाद में पछताना पड़ेगा और कहेंगे कि इतना-इतना करा, लेकिन कुछ मिला नहीं-पाया नहीं।

* कैसी कॉमन कक्षा पर काकाजी जैसे पुरुष वर्ते हैं। हमें भजन-भक्ति भगवान की नहीं करनी, बल्कि मुक्तों की करनी है। जबकि **हमें तो मुक्तों के साथ ही बराबरी का भाव रहता है।** पर, **बापा ने ये प्रणाली हमारे लिए रखी है। भक्तों की कसनी सहने का वारसा हमें मिला है।**

* स्वीकारना यानि – गुण लेना है। 'उसे तो अपनी महिमा बढ़ानी है, इसलिए करा करता है' – यूं सोचने-देखने से अपने पर 'पाप' चढ़ता है।

* प.पू. स्वामिजी ने काकाजी को बोला होगा कि यहां बहनों को एक घंटा बात करना। बहनों ने काकाजी को कहा कि –

'भगवान के साथ संबंध तो है, लेकिन अखंड रहे – टूटे नहीं, उसका काकाजी सरल उपाय बताईए।'

देखो, वर्ता ना जाए, वो गुनाह नहीं है; पर हम से ऐसा नहीं होता, उसका इन बहनों की तरह भीतर में दुःख तो होना ही चाहिए।

* **गलती खा जाएं, भूल जाएं – ये सब भले हो जाए, लेकिन हमें उसकी चोट तो लगनी ही चाहिये।** बरत ना पाए उसका भी ***'हाय राम! मैं ये कर नहीं सकता'* – यूं करके उदासी में ही बैठे नहीं रहना है।** एक बार जो गलती हो जाए वो कबूल करें, आगे चलने लगें और... दोबारा वो ना करें।

* ज़रा अपने भीतर सोचें कि – अपने आपको रिलॅक्स करने हम यहाँ आ गए – मनमानी करने के लिये यहाँ आ गए, अपनी वृत्तियाँ पोसने के लिये यहाँ आ गए क्या? तब बात अलग है। पर... दिखावा क्या करा कि काकाजी को राजी करने आए हैं।

* भगवान की मूर्ति जिनके द्वारा हमें मिली हो, उनको याद करके **रात को सोते समय – जब तक नींद नहीं आए, 'स्वामिनारायण – स्वामिनारायण' करते – करते सो जाएं।**

यह एक सायंटिफिक बात है। सुबह उठेंगे न – तब भजन की हमें कन्टीन्यूईटी लगेगी। मतलब कि हम जो छः घंटे सोए, तब तक अनकॉन्सियस माईन्ड में भी वो भजन चला है।

वो चिनगारी भीतर में कई सूक्ष्म वृत्तिओं को जला देती है। जैसे रुई की गठरी में एक 'स्पार्क' (चिनगारी) पड़ जाए, तो वो पूरी गठरी को जला ही देगा – ऐसा ही ये है। काकाजी ने ये सारी गहन बातें एकदम इज़ी करके हमें बता दी है!

पर, हम रात को सोते समय क्या सोचते हैं कि कल ये करेंगे-वो करेंगे; आज मुझे इसने ये कह दिया था और मुझे ये कहना चाहिये था, उसकी बजाय मैंने ये कह दिया – वगैरह। ❑

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 15.9.2008, सोमवार — ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज – स्मृति पर्व

(2) दि. 18.9.2008, गुरुवार — ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज – स्मृति पर्व

(3) दि. 24.9.2008, बुधवार — भगवान श्री स्वामिनारायण एवं अ.म.मु. जागास्वामी – स्मृति पर्व

(4) दि. 25.9.2008, गुरुवार — एकादशी, अ.म.मु. कृष्णजी अदा एवं
ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज – स्मृति पर्व

(5) दि. 26.9.2008, शुक्रवार — मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी, ब्रह्मस्वरूप भगतजी महाराज और
ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज – स्मृति पर्व

(6) दि. 30.9.2008, मंगलवार — नवरात्रे प्रारंभ

(7) दि. 1.10.2008, बुधवार — परम पूज्य दिनकरभाई का प्रागट्य दिन

(8) दि. 9.10.2008, गुरुवार — **दशहरा**, प्र.ब्र.स्व.प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का पार्षदी दीक्षा दिन

(9) दि. 11.10.2008, शनिवार — एकादशी, व्रत

(10) दि. 12.10.2008, रविवार — मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामिजी अंतर्धान तिथि

(11) दि. 14.10.2008, मंगलवार — **शरदपूर्णिमा**, मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामिजी का प्रागट्य दिन
प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का भागवती दीक्षा दिन
प.पू. दिनकरभाई की प्रागट्य तिथि

(12) दि. 16.10.2008, गुरुवार — ब्रह्मस्वरूप प.पू. जागास्वामिजी की जन्मजयंती

(13) दि. 24.10.2008, शुक्रवार — एकादशी, व्रत

(14) दि.26.10.2008, रविवार — धनतेरस
अशोकविहार मंदिर में 'धनपूजा'–सुबह 8:30 से 10:30

(15) दि. 27.10.2008, सोमवार — काली चौदस

(16) दि.28.10.2008, मंगलवार — **दीवाली**
अशोकविहार मंदिर में 'शारदा पूजन'–सुबह 9:30 से 11:00

(17) दि.29.10.2008, बुधवार — अन्नकूटोत्सव
वार्षिक स्नेहमिलन, नूतन वर्ष–विक्रम संवत २०६५ प्रारंभ
अन्नकूट आरती – सुबह 11:30 बजे

(18) दि.30.10.2008, गुरुवार — **भैयादूज**

(19) दि. 3.11.2008, सोमवार — **लाभपंचमी**

(20) दि. 9.11.2008, रविवार — प्रबोधिनी एकादशी–व्रत, तुलसी विवाह-प्रारंभ

(21) दि.12.11.2008, बुधवार — **देवदिवाली**, तुलसी विवाह-समाप्त, श्री गुरुनानक जयंती

R.N.I. 28971/ 77 (Air Mail)
'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months
If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**
'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2730 1327
Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A 6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052